श्री बाबा लाल दयाल जी

की

अमर कहानी

तथा

भजन

लेखक तथा प्रकाशिक

पण्डित शिव राम शर्मा वैष्णवी

भद्रोड़, जम्मू ।

Rs10/-

❖❖❖

।। शुभ सूचना ।।

श्री भगत जनों आप को यह जानकर अति अन्त खुशी प्राप्त होगी कि जम्मू परान्त के भदरोड़ निवासी श्री शिव राम शर्मा ने अपनी वाणी द्वारा श्री लाल दयाल विष्णुांशी की परम पवित्र अमर कहानी तथा उनके पवित्र श्रद्धा युकत भजन मधुर वाणी द्वारा जनता जर्नादन को पेश करने का प्रयत्न किया उस को श्रवण कर के अपने जीवन को सफल करने की कृपा दृष्टि करे तथा सुभाग्य के भागी बने।

जय प्रभु बाबे लाल दयाल जी की जय ।

उनके माता पिता जी की जय।।

सुरेश शर्मा गली मुहल्ला,
पीर मीठ्ठा, जम्मू।।

।। श्री हरिः ।।

विषय सूची पृष्ट

1. श्री गणेश विनय 1

2. श्री गुरू विनय 2

3. श्री माता सरस्वती विनय 3

4. श्री नव ग्रह विनय 4

5. श्री गुरू महाराज लाल दयाल जी की अमर कहानी 5 से 21

6. श्री लाल दयाल के भजन 22 से लेकर 27

7. लेखक की विनय 28

❖❖❖

श्री गणेश विनय

।। श्र्लोक ।।

गजानंन भूत गणादिसेवितं कपित्थ जम्वू फल चारु भक्षणम।
उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम।।

श्री गणपति नु मथ्थ टेका शिवदा पूत कहलान्दा सी।
विघ्न विनाशक सुन्दर जेहड़ा परिपूर्ण कहलादा सी।।

ओदे चरणी सीस धरा मैं दया सागर कहलान्दा सी।
कर जोड़े अरजा करदा शिव दयालु ओ कहलान्दा सी।।

अष्ट सिदिनव निदि के दाता दयालू तु कहलान्दा सी।
सम दृष्टि सुन्दर है तेरी महा दयालु कहलान्दा सी।।

हरकार्य नूं पूर्ण करदा शिव पूत भी कहलान्दा सी।
पार्वती का सुन्दर जाया विघ्ननाशी कहलान्दा सी।।

हरदम शिव प्रणाम करे सुन मूद मंगल कहलान्दा सी।
कार्य सम्पूर्ण कर छेती तैनु सीस झुकान्दा सी।।

❖❖❖

।। श्री गुरू महिमा ।।

ऊँ गुरू ब्र्ह्मा गुरू विर्ष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात्पर ब्रह्मः तस्मे श्री गुरूवे नमः।।

ब्रह्म ज्ञानी श्री संत गुरू मेरा चरनी ओदी सीस धरा।
हर समय हरि दा ध्यान करा मै ओदी चरनी सीस धरा।।

ब्रह्मा विष्णु शिव भी आपे अलख निर्यज्जन रूप धरा ।
कृष्ण दे भांगु रूपसी ओदा लाल दयाल दा रूप धरा।।

सुरती उबता नु हरदम रहन्दी सत गुरू ओ कहलान्दा सी।
रागदैष तुन्यारा रेहन्दा योगी महा कहलान्दा सी।।

ओदे फड के चरन भी सोहने सानु लिखारी बनान्दा सी।
सौ सौ संज्जदे ओहदे करदा शिव दा गुरू कहलान्दा सी।।

शिव दा जीवन सफल करन नूं आपे विष्णु आया सी।
हरदम मेरे नाल ओ रहन्दा धन्य धन्य गुरू कहलान्दा सी।।

मथ्था टेका सौ सौ बारी चरनी सीस झुकाया सी।
धन्य धन्य सत गुरू मेरा प्यारे जय जयकार खुलाया सी।।

❖❖❖

।। श्री मात सरस्वती जी की महिमा ।।

सरस्वती मां ने कृपा कीती ब्रह्म पुत्री कहलान्दी सी।
मेरी वाणी ऊते बैठी महा शक्ति कहलान्दी सी।।

दिव्य दृष्टि भी देन्दी छेती महा दानन कहलान्दी सी।
भकित दी भी विक्षा देके महादयालु कहलान्दी सी।।

महालक्ष्मी महाकाली छेती अपना रूप बनान्दी सी।
नैया डग मग डोले जेहडी ओनु पार लगान्दी सी।।

आपे लक्ष्मी आपे विष्णु शिव शक्ति बन जान्दी सी।
नैया रूपी आपे बनके नैया पार लगान्दी सी।।

ज्योति रूप दा रूप ओ बन के सृष्टि खेल रचान्दी सी।
जेहडा ओदी शरणी आवे ओनु पार लगान्दी सी।।

ओहदे चरनी सीस झुकाओ महाशक्ति बन जान्दी सी।
ब्रह्म विद्या दी भिक्षा देन्दी महा दानन बन जान्दी सी।।

धन्य धन्य शिवदे भाग्य सुनो अब ओनु लिखारी बनान्दी सी।
लाल दयाल दी कथा बनाके भकतां नु समझान्दी सी।।

❖❖❖

।। नवग्रह विनय ।।

श्र्लोक :- ओं ब्रह्मा मुरारिस्त्रि पुरान्त कारी
भानुः शशी भूमि सुतो वुधष्च।
गुरूश्च शुक्रो शनि राहु केतवः सर्वे
ग्रहाः शन्ति करा भवन्तु।।

मंगल बुध ते शुक्र है आप सोहने राहु केतु ते शनि दा रुप तेरा ।
वृहस्पति ते चन्न आकाश ऊते सूर्य देव भी चम्कदा रुप तेरा।।

विष्णु समझ के करा प्रणाम छेती इन्हा विच मैं समझन्दा रुप तेरा।
भूल चूक नु करो मुयाफ छेती इको ब्रह्म दा समझ दा रुप तेरा।।

शिव ऊते भी कृपादी करो दृष्टि ओ समझ दा ब्रह्म दा रुप तेरा।
नव ग्रह जी मेहर दी करो दृष्टि ओ समझ दा विष्णु दा रुप तेरा।।

❖❖❖

श्री गुरु महाराज जी की अमर कहानी।।

।। प्रथम रचना ।।

परमदयालु शक्तिशाली लाल दी गाथा श्रवण करो।
श्री लाल के दयालु भकतों उनकी गाथा श्रवण करो।।
लाल दयाल महा योगीश्वर जो शकित मय कहलान्दे सी।
महा ज्ञानी महा विज्ञानी महा योगी दरसान्दे सी।।
महा विष्णु के अंशी जेहड़े उसकी गाथा श्रवण करो।
श्री लाल के दयालु भक्तों उनकी गाथा श्रवण करो।।
श्री विष्णु ने शीघ्र प्यारे हृदय में यह विचार किया।
ऊथल पुथल शीघ्र ही मचा दी कालि युग में विन्हार किया।।
पापी जन अज्ञानी उत्पण सृष्टि में यह श्रवण करो।
श्री लाल के दयालु भकतों उनकी गाथा श्रवण करो।।
महाज्ञानी मुर्ख जो नर भकतों को दुख देते थे।
भांति भांति के दुख भी देते मन में भी मुस्काते थे ।।
ऐसी लीला देखी हरि ने क्या किया फिर श्रवण करो।
परम दयालु शकितशाली उसकी गाथा श्रवण करो।।
1421 बिक्रमी सोहनी क्षत्री वंश में आ प्रकटे।
शुकला दुतिया सुन्दर जेहडा सोमवार में आ प्रकटे।।
उसकी परम पवित्र सोहनी गाथा प्यारे श्रवण करो।
श्री लाल के दयालु भकतों उनकी गाथा श्रवण करो।।
माघ मास में विष्णुांशी लाल दयालु जी आ प्रकटे।
माता कृष्णा भोला पिता जी उनके घर में आ प्रकटे।।
परमदयालु शक्तिशाली उसकी गाथा श्रवण करो।
श्री हरि दयालु भकतों उसकी गाथा श्रवण करो।।

कृष्ण की भांति लीला करते हरि का ध्यान लगाते थे।
चैतन स्वामी सतगुरु सुन्दर ध्यान में लिव लगाते थे।।
ज्ञान ध्यान की युक्ति बताई उसकी गाथा श्रवण करो ।
श्री हरि दयालु भक्तों उसकी गाथा श्रवण करो।।
ज्ञानी ध्यानी महाज्ञानी सृष्टि में भरपूर हुए।
रिद्धि सिद्धि के खुब भंण्डारी सृष्टि में भरपूर हुए।।
रागदैष से दूर रहे वह उसकी गाथा श्रवण करो ।
परमदयालु शक्तिशाली उसकी गाथा श्रवण करो।।
सारी सृष्टि सुखमय कर दी भ्रमन शीघ्र कर डाला।
नामदान की वर्षा करने भ्रमन शीघ्र कर डाला।।
कृष्ण की भांति महाज्ञानी उसकी गाथा श्रवण करो ।
श्री दयाल की महिमा न्यारी उसकी गाथा श्रवण करो।।
गंगा मैया प्रकटी छेती लुटिया में प्रवेश किया।
वौली रुप में शीध्र प्रकटी लुटिया में प्रवेश किया।।
दुखीयों के दुख दूर किये थे उसकी गाथा श्रवण करो ।
श्री लाल के दयालु भक्तों उसकी गाथा श्रवण करो।।
ध्यान पूरी पंचाव के भीतर डेरा तुरत लगाते हैं।
भक्तों की फिर तुरत कामना पूर्ण कर मुस्काते हैं।।
पुत्रहीन को पुत्र देते उसकी गाथा श्रवण करो ।
परमदयालु शक्तिशाली लाल की गाथा श्रवण करो।।

गुरु महाराज जी की अमर कहानी।।

।। दुतिया रचना ।।

इक दिन शिव दामन ऐ कहन्दा अपनी कलम उठाओ जी।
ज्ञानी तपस्वी महायोगी दी लाल दी गल सुनाओ जी।।
हंस–हंस के शिव मन नू कहन्दा अपना हाल बलताओ जी।
तेरे विच की खुवी मनवा सानू भी समझाओ जी।।
शिव दा मन मुस्काके बोले तैनु गल सुनाँवा जी।
जिहन्दे ऊते कृपा हो मेरी छेती ज्ञानी बनावा जी।।
मैं ही ब्रह्मा मैं ही विष्णु मैं ही शिव कहलावा जी।
र्सवदेवते रुप है मेरा मैं ही ब्रह्म कहलावा जी।।
मैं ही र्निमल हृदय करदा पलीता दा जो भरया जी।
मैं ही हाकम मैं ही सेवक मैं सत्य गुणा च भरया जी।।
मैं ही पृथ्वी मैं ही अम्बर सारा रुप मैं धरया जी।
सृष्टि दे विच नजर जो आवे सवना विच मैं वड़्या जी।।
ज्ञानी नु महाज्ञानी करदा सुनावा सतसंग प्यारा जी।
सन्ता शरणी छेती पहुँचावा दस्सा खुब नजारा जी।।
ओदा जग विच छेती करसा सुन लिजो निस्तारा जी।
मैं ही जग विच सुन वलकारी मेरा वज्जे नगारा जी।।
पल विच गोते खुब लगावा विषया वाले प्यारे जी।
मैं ही अरशों फरशों ऊते छेती पहुँचावा प्यारे जी।।
पल विच शहन्शाह बनाके भिक्ष मंगावा प्यारे जी।
मैं थु कोई बलकारी नाही सुनलो मेरे प्यारे जी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर हो के सारे बोलो जय जय बाबे लाल दी।।
सत गुरु दी शरणी छेती तैनु गल सुनाँवा जी।
सुरत शब्द दी चाबी लाके जन्दरें खोल दिखावा जी।।
ओस भकत दा सेवक बनके बेडा पार लगावा जी।
मन मन्ने ता माला फिर दी सच्ची गल सुनावा जी।।

।। भजन ।।

मन मन्ने ते माला फिर दी ए चारे वेद शास्त्र भी कहन्दे नी।
मन मन्ने ते माला फिर दी ए ....
1. षट शास्त्र अठारह पुराण सुनो नाले ज्ञानी सारे कहन्दे नी
मन मन्ने ते माला फिर दी ए मन........................
इस मन नु रस्ते पा छेती सतसंग विच प्यारे जा छेती श्री गुरु ध्यान विच वह छेती सारे सन्त महात्मा कहन्दे नी मन मन्ने ते माला फिरदी ए मन मन्न ते माला फिर दी ए।।
2. सतगुरा दा भजन तु कर छेती फिर आसन सिद्ध लगा छेती।
जद भजन पै ज़ोर तु देवे गा सवे ज्ञानी सारे कहन्दे नी।।
मन मन्ने ते माला फिर दी ए मन मन्न ते माला फिर दी ए षट शास्त्र अठारह पुराण कहें नाले ज्ञानी सारे कहन्दे नी मन मन्न ते माला फिर दी ए मन मन्ने ते माला फिर दी ए।।
3. मन काबु तेरे आजावे कई भांति दे दृण्य भी दिखलावे।
श्री कृष्ण गीता विच कहन्दे नी मन मन्ने ते माला फिर दी ए मन मन्ने ते माला फिर दी ए।।
मन तुरया विच पहुँचान्दा ए ओथे प्रेम दे दृण्य दिखान्दा ऐ। सुन जन्म मरण दे गहड्डे भी मुक जासन सारे कहन्दे नी मन मन्ने ते माला फिर दी ए सुन चारे वेद भी कहन्दे नी मन मन्ने ते माला फिर दी ए..............................
4. मन वन्दर सुनो कहलादा सी सतगुरु भी कलन्दर कहलान्दा सी। ईक भजन दी रसी नक पाके मन करदा वस शिव कहन्देनी मन मन्ने ते माला फिर दी ए सुन चारे वेद ए कहन्देनी मन मन्ने ते माला फिर दी ए।।

जन्म मरण से छुटे प्यारा शिव तु सुनले शब्द न्यारा।
निराकार साकार जो होवे देखे खुब नजारा।।
न दी जिन्दे ते कृपा होवे कर्म करे ओ सारा।
कमल की भांति जग विच विचरे रहन्दा सुना न्यारा।।
ाय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

6. कापी लेके वह जा छेती तेरी कलम चलावा।
जिथे सूर्य भी न पहुँजे तैनु छेती पहुँचावा।।
लाल दयाल दी कथा बनाके संगत नु सुनावा।
ज्ञान वैराग्य दी चपु लगाके तैनु पार लगाना।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

7. महायोगी जो सती यती है विष्णुांशी भारी।
ओहदी महिमा छेती कहन्दो मेरी ईच्छा भारी।।
तेरे मुखो गल सुना मैं लाल दयाल दी भारी।
ओहदी महिमा छेती कहन्दो मेरी ईच्छा भारी।।
तेरे मुखो गल सुनांगा लाल दयाल दी भारी।
किवे सृष्टि ऊते आए कहदो ईच्छा भारी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

8. ध्यान नाल तू गल मेरी सुन शिव मन नु ए कहन्दा।
परम ब्रह्म परमेश्वर जेहड़ा निराकार ओरहन्दा।।
ओहो लाल दयाल सी बन्नेया गल सुनावा सारी।
ध्यान नाल तु महिमा सुनले पुजे दुनिया सारी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

9. मन शिव नू फिर हंस के कहन्दा गल तु सुन लै मेरी
जिस पर मैं प्रसन्न हो जावा सच सुन लै गल मेरी।
खुशियां दे विच हरदम रहन्दा सुन लै गल सच मेरी।
मेरे बिना न माला फिर दी सच्ची गल ए मेरी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
10. घ्यान लगाया शिव ने छेती विष्णु अर्न्तयामी।
राम कृष्ण दा रुप जो सोहना विष्णु अर्न्तयामी।।
सतगुरु जीदा रुप है विष्णु वह है अर्न्तयामी।
चरण कमल विच दण्डवत करदा वह है शिव दा स्वामी।
नारद शारद नच्चदे जिथे लक्ष्मी रहन्दी प्यारी।
वेद पुराण भी महिमा गान्दे उसदी महिमा न्यारी।।
मन दी कृपा शिव ते हुन्दी ओ बनेया सी लिखारी।
बाबे लाल दी महिमा गावे सब तु बडी न्यारी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
11. चौथी भूमिका तुरया पद जो सन्ता ने जो गाया।
शिव भी ओस दी महिमा गावे मन दे विच हर्षाया।।
हंङग तुहङग दे झगडे मूकन सोंहं नाम कहलाया।
अजपा जाप दी माला न्यारी ओस मे राम समाया।।
12. विष्णु ने हुन रुप धारया लाल दयाल बन आए।
ओसदी गाथा प्यारे सुन लो शिव सुन लो मुस्काए।।
महात्यागी महायोगीश्वर महाज्ञानी कहलाए।
बार-बार शिव मथ्था टेके विष्णु ओ दरसाए।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

13. पवित्र भूमि ओसदी जिथे विष्णु प्रभु जी आए।
सर्व कला समर्थ ओदाता ज्ञानी बडा कहलाए।।
कसुर पवित्र सुन्दर सोहना पंजाव देश कहलाए।
राजधानी लाहौर सी ओहन्दी वह सुन्दर दरसाए।।
क्षत्री वंश दे विच ओ प्रकटे ओसदी सुनो कहानी।
भोला राम दे सुन्दर सोहने ओहदी सुनो कहानी।।
मथा चम्के सुन्दर ओहदा हैसी बडा ओ दानी।
नाम हरि दा मुखो जपदा ओहदी सुनो कहानी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

14. हर बेले ओ हंसदा रहन्दा ज्ञानी बडा दरसावे।
मुखो राम राम ही बोले सोहना मुख दरसावे।।
चार भूजैया विष्णु जेहडा सुन्दर लाल कहलावे।
नाम हरि दा सुन्दर जेहडा रुप लाल कहलावे।।
महाशक्ति भंण्डारी प्यारा लाल दयाल हर्षावे।
महाविष्णु ओ शक्तिशाली मुखो ओ मुस्कावे।।
सर्व देवों की शक्ति जो है राम रुप कहलावे।
सर्व जो शक्ति मान विधाता लाल दयाल कहलावे।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

15. घट-घट वासी अर्न्तयामी आपे वह बन आया।
नूरी मुखडा होठ गुलाबी सुन्दर ओ दरसाया।।
माता कृष्णा सुन्दर ओहदी सुन्दर उसदा जाया।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि के दाता शिवदा गुरु कहलाया।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

16. मात पिता दे सुन्दर जाये लाल दयाल अवतारी।
घट–घट वासी अर्न्तयामी चक्कर सुर्दशन धारी।।
पृथ्वी दा अन्धकार मिटाने महाज्ञानी ब्रह्मचारी।
महायोगीश्वर बन कर आए लाल दयाल जी भारी।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
17. 1421 विक्रमी सोहनी सुन्दर सम्वत कहलावे।
शुकला दुतिया सुन्दर देखो सोमवार कहलावे।।
शुद्धवार तिथि ओ सोहनी माघ मास दरसावे।
विष्णु लोक दे विचु आए शिव दा मन मुसकावे।
आलम फाज़ल ज्ञानी बडा ओ बुद्धिमान कहलान्दा सी।
सतसंग दी ओ वर्षा करदा मुखो फूल बरसान्दा सी।।
18. श्री ज्ञान भण्डारी सोहना चन्न भांङगु दरसान्दा सी।
मात पिता दी सेवा करदा हरदम खुशी मनान्दा सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
19. मात पिता दा सुन्दर सोहना पुत्र बनके आया सी।
सर्व जो शक्तिमान विधाता शिव दा ईष्ट कहलाया सी।।
अवतारी दे खेल न्यारे लाल दयाल कहलाया सी।
आठ वर्ष दी आयु सोहनी अवल्लड्डा खेल रचाया सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
आठ वर्ष दा होया सोहना लाल दयाल कहलाया सी।
गाईया चारन छेती जान्दा नदी ते डेरा लाया सी।।
आज्ञाकारी बनके आया हरि दा रुप कहलाया सी।
नदी दे ऊते लेटे सोहने रब्बी नूर दिखाया सी।।

शेषनाग ने छाया किती ऐसा दृष्य दिखाया सी।
विष्णु बनके नज़री आए लाल दयाल कहलाया सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
20. इतने विच इक साधु मण्डली छेती वहाँ आ जान्दी सी।
शेष नाग दी छाया देखी दूरों ओं मुस्कान्दी सी।।
श्री मण्डली दा सतगुरु सोहना रब दा रुप कहलान्दा सी।
चैतन स्वामी नाम सी ओहदा दूरु देख मुस्कान्दा सी।।
ध्यानावस्था दे विच लेटे विष्णु नज़री आन्दा सी।
आके छेती गले लगाया मुखो ए फरमान्दा सी।।
प्रेम दी दृष्टि छेती कीती ओनु शिष्य बनाया सी।
शक्तिशाली गुरु सी प्यारा ज्ञानी लाल कहलाया सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
ज्ञान वैराग्य दी शिक्षा देके ऊज्वल छेती बनाया सी।
ब्रह्मज्ञानी छेती किता ज्ञान दा सबक पढ़ाया सी।।
मंत्र गुरु से छेती लेके चरनी सीस झुकाया सी।
सत्यवादी श्री सतगुरु पुरा लाल नु शिष्य बनाया सी।।
परमहंस फिर मुखो कहन्दे बेटा बन तु जाएंगा।
सृष्टि ऊते धूम मचेगी ज्ञानी तु कहलांएगा।।
लाल दयाल श्री सत गुरु बनके ब्रह्मयोगी कहलांएगा।
आर्शीवाद सतगुरु ने दीती महाज्ञानी कहलांएगा।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
22. पृथ्वी भ्रमन छेती करदे जीवन सफल बनान्दा सी।
परिपूर्ण श्री हरि जो प्यारा ओहदा ध्यान लगान्दा सी।।

सतसंग दा खोल भण्डारा भकता नू लुटान्दा सी।

भक्ति ज्ञान दी विक्षा देके दुनिया मस्त बनान्दा सी।।

निराकार दा ज्ञान भी देके गुरु ने नजर मिला डाली।

भम्वर गुफा दे विच पहुचाया प्रभु दी झलक दिखा डाली।।

सकंल्प विकंल्प विचिलत जो करदा ओदी क्रिया मिटा डाली।

निरुकल्प विच रहना बेटा ऐसी युक्तिं बता डाली।।

जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।

इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

।। भजन ।।

सतगुरु दी नज़र विच शक्ति ए ओ मिकनातीस कहलान्दे नी।

जेहडा शिव लोहेदा टूकड़ा सी ओनु खिच छाती नाल लान्देसी।। सतगुरु दी नज़र विच शक्ति ए ओ मिकनातीस कहलान्दे नी.................................

1. हुन इको दा सबक पढ़ा प्यारे ऐन गैन दे नुकते मिटा प्यारे। ब्रह्मज्ञानी दी झलक दिखा प्यारे सानु अपना भकत बना प्यारे।। सतगुरु दी नज़र विच शक्ति ए ओ मिकनातीस कहलान्दे नी.................................

जेहडा शिव लोहेदा टूकड़ा सी ओन खिच छाती नाल लान्दे सी।

शिव दा मन चंचल सुन प्यारे मेरे मन नू ज्ञानी बनान्दा जा।

2. विष्णु रुपी सतगुरु मेरा गंगा चरना विचो निकली सी।

अमृतरुपी गंगा सोहनी चरना विचो तेरे निकली सी।।

ओदे विच गोते लगा प्यारे मन शिव दा शुद्ध बनान्दा जा।

शिव दा मन चंचल सुन प्यारे सानु अपना भकत बनान्दा जा।।

सुगुरु दी नज़र विच शक्ति ए ओ मिकनातीस कहलान्दे सी।

जेहडा शिव लोहदा टूकड़ा सी ओनु खिच छाती नाल लान्देसी।।

3. मातपिता गुरु आज्ञा लैके भ्रमन छेती कर दिता।
यू. पी. सी विच भी घूमे सैर सपट्टा कर दिता।।
दिहली निपाल कावल भी घूमे फिर सैर सपट्टा कर दिता।
सारे देसा विच ओ धूमे भ्रमन छेती कर दिता।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
4. लाल दयाल महायोगी बनके हरिद्वार ओ जान्दे सी।
सतसंग दी वर्षा करदे अमृत मी वर्षान्दे सी।।
ज्ञान ध्यान दी वर्षा करदे योगी मस्त कहलान्दे सी।
जेहडा शरणी छेती आवे हरि दे नाल मिलान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
5. हरिद्वार भी 25 पज्जी कोसते आसन छेती लगान्दे सी।
कुटिया सोहनी छेती बनाई ओथे प्रभु ध्यान्दे सी।।
तुलसी वृक्ष दे पौदे लाके फूल बहुतेरे लान्दे सी
हरिदा ध्यान भी बहुता करदे नच नच किकली पान्दे सी।।
करामाती भी साधु सोहना दुरो नज़री आन्दे सी।
चन्न सुरज भी सज्जदे करदे योगी बड़े दरसान्दे सी।।
नुरी ओहदा मुखडा सोहना चन्न सुरज शरमान्दे सी।
दर्शन छेती करदे जेहडे ठंड कालजे पान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
6. सिन्ध भी सारा धूमे छेती सिद्ध फकीर कहलान्दे नी।
लाल बादशाह लोकी कहन्दे चरनी सीस झुकान्दे नी।।
हिन्दु मुस्लम मथा टेकन खुशीयां पे मुनान्दे नी।
नच नच किकली लोकी पान्दे प्रभु दा शुक्र मनान्दे नी।।

7. लाल फकीर नु देख देख के लोकी खुशी मुनान्दे सी।
चार चुफेरे किकली पावन नच नच पै हर्षान्दे सी।।
देश दिशान्तर छेती धूमे गंगा दर्शन पान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

8. 1451 विक्रमी नु फिर सहांरन पुरआजान्दे सी।
ओथे आसन खुब जमाया मन विच ओ मुस्कान्दे सी।।
सतसंग दी वर्षा करदे लोकी खुशी मुनान्दे सी।
हिन्दु मुस्लम शिष्य बने फिर चरनी सीस झुकान्दे सी।।
आलम फाजल ज्ञानी बडे वह बुद्धिमान कहलान्दे सी।
हंग तुहंग तु रहित बने वह ब्रह्मज्ञानी कहलान्दे सी।।
देवते ओदी महिमा गावन नच नच किकली पान्दे सी।
निक्के बड्डे सब शरनी आए चरनी सीस झुकान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

9. 25 पच्ची कोसते छेती जावन गंगा दर्शन पाने नु।
लाल दयाल फिर मुखो कहन्दे जीवन सुफल बनाने नु।।
गंगा चरन हरिदे निकली लाल नु खुशी बनाने नु।
लुटिया विच फिर आके बैठी अपना खेल दिखाने नु।।
हंस के माता छेती बोली वौली छेती बना लेना।
लुटिया वाला गंगा जल ओ छेती ओथे पा देना।।
स्नान करी हुन छेती प्यारे जीवन सुफल बना लेना।
लोप हुई फ़िर गंगा मैया हरि नु सीस झुका देना।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

10. प्रातःकाल स्नान ओ करदे लाल दयाल क़हलान्दे सी।
सतसंग दी वर्षा करदे जीवन सुफल बनान्दे सी।।

हरिदा प्यारा साधु जेहडा हंस के खुशी मनान्दे सी।
लोकी दर्शन कर कर जान्दे हरि नु पैध्यान्दे सी।।
सुन समाधि लाल जी लान्दे हृदय शुद्ध बनान्दे सी।
हाजीशाह पीरा दा पीर जो छेती ओ आ जान्दे सी।।
नुरी ज्योति सुन्दर सोहनी दर्शन छेती पान्दे सी।
रव्व दा मुखडा लाल दा मुखउा कहके खशी मुनान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
11. ठण्ड कालजे पैन्दी ओदे देख देख मुस्कान्दे सी।
ओनु पीरा दा पीर भी कहन्दे नच के खुशी मनान्दे सी।।
ओहदा हामी छेती बनेया चरनी सीस झुकान्दे सी।
झुक झुक सज्जदे छेती करदे मुखो बोल सुनान्दे सी।।
हर बेले ओदे कोलही रहन्दे रवनु पैध्यादे सी।
हरदम ओदी सेवा करदे मुरीद ओदे बन जान्दे सी।।
हाजी पीर फिर मुखो कहन्दा रब्ब सानु अज मिलया सी।
पीरा विच पीर ए पुरा नूरी मुखडा मिलया सी।।
आओ लोकी दर्शन पाओ सानु खुदा अज मिलया सी।
वहशिता विचु नूर अलाई रवदा दर्शन मिलया सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
12. पीर फकीर ते मुरशद पुरा हाजी पीर हुन कहन्दा सी।
नूरी अलाई मुखडा ऐदा हंस हंस के ओ कहन्दा सी।।
ओदे अग्गे पिछे नचे रव्व मिलया हुन कहन्दा सी।
ऐदे विच रव्व मिनु दिसे कहन बाझ नरहन्दा सी।।
मुसलमान जद देखन ओहनु अग्ग पावडदे बल्लदे सी।
चुगली लान्दे हाकम ताई छेती ओथे चल्लदे सी।।

इस्लाम धर्म खतरे विच देखो चुगली लान नु चलदे सी।
मुल्ला पीर फकीर भी नसन्न लाहौर दे पासै चलदे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

13. खीर खवाजा रव्वदा प्यारा हाकम ओ कहलान्दा सी।
पंजाब दे विच ओ राजसी करदा हाकम ओ कहलान्दा सी।।
ईमानदार भी बडा सी सोहना रव्वदा प्यारा कहलान्दा सी।
चुगली सुन के खुब ओ हसें रव्व दा शुक्र मनान्दा सी।।
पीर फकीरां नु ओ कहन्दा छेती चलके देखाँगा।
गल सच्ची जेहोई थोहडी ओनु मार मुकावागा।।
राम रहीम ओ समझे इक्को छेती चलके देखाँगा।
ओनु मौत सजावी देसा छेती छेती देखाँगा।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

14. पीरा नु ओ छेती कहन्दा आपे छेती आया सी।
नूरी मुखडा रव्वदा देखे दुरू ओ मुस्काया सी।।
लाल दयाल नु देख देख के खुशीयां विच हर्षाया सी।
अल्ला ताल्ला समझे ओनु चरनी सीस झुकाया सी।।
भक्ति भाव विच हथ फिर जोडे लाल नू सीस झुकान्दा सी।
आठ सौ विघे जमी भी दीती खुशीयां पया मुनान्दा सी।।
सज्जदे कर कर खुशीयां मुनावे नच नच मौज मुनान्दा सी।
कावल मुरशद मिल्लया सानु नच नच किकली पान्दा सी।।

15. परशाद नु छक्क के चरनी लगा पीर नु सीस झुकान्दा सी।
रव्वदा रुप तुसी बन आए मुखो हंस फरमान्दा सी।।
हथ जोड के वास्ते पावे मुहो ओ सुनान्दा सी।
लाल दयाल दी सुरत सोहनी हंस के किकली पान्दा सी।।

जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
16. लख्खा करोडा घमडे दिते खुशीयां पैया मुनान्दा सी।
हर बेले ओ ध्यान सी करदा चरनी सीस झुकान्दा सी।।
जन्म मरन दी छुट्टी पाके जीवन सफल बनान्दा सी।
शिव भी हंस के बना लिखारी सौ सौ शुक्र मनान्दा सी।।
ओथे चलके बाबा सोहने छेती पैर बढ़ान्दे सी।
सारी पृथ्वी छेती घूमी पल विच खुशी मुनान्दे सी।।
लख्खा नु सतसंग सुना के चेले खुब बनान्दे सी।
ईच्छा पूरी करदे छेती खुशीयां वे मुनान्दे सी।।
विष्णुंशी बनके सोहने वैष्णव पंथ चलान्दे सी।
सुनो ध्यान पुरी विच आके अपना आसन लगान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
17. भकतां नु खुशहाल ओ करदे पुत्र प्यारे बन्डदे नी।
पुत्रहीन नु पुत्र देन्दे पुत्र खुब भी बन्डदे नी ।।
बहना न ओ वीर भी देन्दे पुत्र मां नु देन्दे नी।
धूम मच्ची ओहदी सुन प्यारे छेती पुत्र बन्ड्डे नी।।
जेहडा ओथे जावे सज्जनो गम ओदे नस जान्दे सी।
खाली चोली छेती भरदा बाबा लाल कहलान्दे सी।।
मिट्टीयां मुरान्दा छेती पान्दे खुशीयां विच मुस्कान्दे सी।
लख्खा लोकी लाल नू मन्नन लाल जेहडे कहलान्दे सी।।
ध्यान पुरदी भूमि सुन्दर दुरो ढ़लका मारदी ऐ।
स्वर्ग पुरी दे भांगु दिसे चन्न भांगु दरसान्दी ऐ।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।

18. देवी देवते कृपा करदे अमर पुरी दरसान्दी सी।
नारद मुनि दी वीना सुन्दर महिमा ओदी गान्दी सी।।
पुत्रहीन नु पुत्र देन्दे दानी लाल कहलान्दे सी।
अर्श फर्श ते खुशीयां बरसन समदृष्टि कहलान्दे सी।।
जेहडा शरणी जावे ओदी ओनु खुशी बनान्दे सी।
विष्णु रुपी लाल दयाल जी अमृत मय बरसान्दे सी।।
निक्के बड्डे सारे मन्नदे स्नान भी ओथे करदे सी।
गंगा लुटीया विचो निकली भौली रुप ओ करदे सी।।
जन्म जन्म दे पाप भी लथे जेहडे स्नान भी करदे सी।
भूत प्रेत भी दुरुं नसदे ओथे पैर जो धरदे सी।।
झुक झुक मथ्था शिव भी टेके चरनी सीस झुकान्दे सी।
वैष्णव पंथ दी गुड्डी छेती देखो प्यारे चढ़ान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
19. लाल दयाल दी संगत नु ए शिव इक गल सुनान्दा सी।
निश्चे वाझु कुज नही हुन्दा सच्ची गल सुनान्दा सी।।
अट्ठो पेहर ओदे गुण गाओ मुखो हंस सुनान्दा सी।
जन्म सुफल हो जाए तेरा शिव छेती फरमान्दा सी।।
ओहदा सिमरन ध्यान लगाओ सतगुरु पुरा बनेया ओ।
विष्णुंशी लाल दयाल ए शिव दा सहारा बनेया ओ।।
सतगुरु दीनदयाल ओ सोहना भकतां दा सहारा बनेया ओ।
परब्रह्म दी शक्ति सोहनी दयालु प्यारा बनेया ओ।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
20. अन्त गुण दी गुथली जेहडा लाल दयाल कहलान्दा ऐ।
सौ सौ सज्जदे शिव भी करदा विष्णु रुप कहलान्दा ऐ।।

सर्व देवों की शक्ति जेहडी सतगुरु ऐ कहलान्दा ऐ।
अष्ट सिद्धि नव निद्धी के दाता शिव दा गुरु कहलान्दा ए।।
ओहदी महिमा गा गा थके श्रदा भी मुस्कान्दी सी।
वेद पुराण भी श्रुतिया जेहडी मुखो ओ फरमान्दी सी।।
अन्त वैअन्त तथा नैति नैति कहके सीस झुकान्दे सी।
लाल दी वे अन्त है महिमा मुखो ओ मुस्कान्दे सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
वैष्णव शिव ने कलम उठाई छेती लिखारी बनाया सी।
जीवनी छेती लिख के ओहदी सेवक भी बनाया सी।।
सौ सौ मथ्थे टेके ओहन ओ विक्षारी बनाया सी।
महिमा ओदी गा न थक्के ओहनु लिखारी बनाया सी।।
जय बोलो बाबे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
इक स्वर सारे होके बोलो जय बाबे लाल दी।।
जेहडी ओहदी शरणी आवे जन्म मरन मूक जान्दा ऐ।
सच्चो सच सुनावे "शिव" भी मोक्ष पदवी पान्दा ऐ।।
चरन गुरा दे छड्डो नाही ओहदा दास सुनान्दा ऐ।
समाप्त गाथा कीती सुन्दर शिव सोहना मुस्कान्दा ऐ।।

श्री गुरु महाराज लाल दयाल की महिमा का लिखारी –

पण्डित शिव राम वैरागी वैष्णव

भद्रोड़, जम्मू।

❖❖❖

भजन नं० 1

सानु इक बारी दर्शन दे छेती सानु देखन दा हुन चा चड्ड्या।
डलक्का मारे सूरज भांगु ओनु देखन दा हुन चा चड्ड्या।।
अस्सा तरले लख्खा पाए नी कोठे चढ़ काक ऊडाए नी।
इक बारी फेरा पा जांवी तेरे मुख देखन दा चा चड्ड्या।।
सानु इक बारी दर्शन दे छेती सानु देखन दा हुन चा चड्ड्या।
सानु ऊता दी सैरा करा जावीं इक बारी झलक दिखा जावीं;
दिव्य दृष्टि खोल दिखा जावीं सानु तेरे मिलन दा चा चड्ड्या।
सानु इक बारी दर्शन दे छेती सानु देखन दा हुन चा चड्ड्या।।
साडी सुरती वृति इक करदे शिव नेत्र विच भी नज़र करदे।
ओथे पुजके तेरा दरस करा सानु तेरे मिलन दा चा चड्ड्या।
सानु इक बारी दर्शन दे छेती सानु देखन दा हुन चा चड्ड्या।

❖❖❖

भजन नं० 2

साडी डोरी तेरे हथ प्यारे इक बारी सानु चढ़ा जावीं।
गुड्डी अद्ध असमानी जावे सानु ऊता दी सैर करा जावीं।
साडी डोरी तेरे हथ प्यारे इक बारी सानु चढ़ा जावीं।।

हुन भम्वर गुफा दे पार पुज्जा ओथे अपना सोहने दरस दिखा। नाले हंग तुहंग भी मिट जावे साडी डोरी ऊता चड्डा प्यारे इक बारी दरस दिखा प्यारे।।

शिव तेरा तेरा लड्ड फड्ड्या सानु ऊता दी सैर कर अड्ड्या। हुन जन्म मरन मेरा मुक्क जावे सानु इक बारी मुख दिखला जावीं। साडी डोरी तेरे हथ प्यारे इक बारी सानु चढ़ा जावीं।।

❖❖❖

भजन नं० 3

तैनु दयालु सारे कहन्दे नी कृपालु सारे कहन्दे नी। हथ जोड के भी अरदास करा महादयालु सारे कहन्दे नी।।

मेरी अरजी पर हुन गौर करो मन्जल पै पहुंचाने गौर करो। तैनु दयालु सारे कहन्दे नी कृपाल सारे कहन्दे नी।।

सुन भ्रम भी साडे दूर करो अज्ञान अन्धेरा दूर करो। श्री सूरज रुपी मुख तेरा दिखला के अन्दर नूर करो।।

जेहडी असली मुरत तेरी ए डलक्का मारे मैं सुनया सी। मुखडे नु देखा चा चड्ड्या तैनु सारे दयालु कहन्दे नी।।

हथ जोड के शिव भी अरज करे महादयालु सारे कहन्दे नी कृपाल सारे कहन्दे नी हथ जोड के भी अरदास करो महा दयालु सारे कहन्दे नी।।

❖❖❖

भजन नं० 4

सानु पंछी भांगु बना छेती सानु ऊता दी सैरा कर छेती सानु पंछी..........................

मेरा जन्म मरन भी मूक जावे सानु ब्रह्म दी झलक दिखा छेती। सानु पंछी..........................

असा लड़ सतगुरु तेरा फड्ड्या ई। तु लड्ड फड्डनी दी लाज रखी। मेरी ऊंगली भी हुन फड्ड छेती सानु नाम दी गड्डी चढ़ा छेती।

न मुमकन नु मुमकन करदे ओहदा भेद भी दिलो मिटा छेती सानु पंछी..........................

अमृत फल जेहडा मिट्ठा ए। ओदा स्वाद भी छेती छक्का छेती।
अमृत फल खाके अमर होवा सानु अपने जया बना छेती।।
सतगुरु जी शिव दी मरजी ए। साडा जन्म मरन भी मुकां छेती।
मेरी भावना प्यारे पूर्ण करो साडा जन्म मरन भी मुका छेती।
सानु पंछी भांगु बना छेती।।
तु सागर ते मैं बुद्ध तेरी उस सागर विच पहुँचा छेती। तेरे विच मिलके इक होवा मेरा भेदभाव भी मिटा छेती। सानु पंछी भांगु बना छेती।।

❖❖❖

भजन नं० 5

मेरी सच्ची गल हुन सुन भकता तैनु सचो सच सुनावा गा।
मेरी निश्चेय नाल जो गल सुने ओ मिट्ठीयां मुरादां पाएंगा।।
मैनु झठ बोलन दी लोड नही। सच बोलन दा हुन चा चड्डया।
मेरी सच्ची गल हुन सुन भकता....................
जिथे हनैरा हनैरा ही होवे ओथे सूरज प्यारे सुन चढ्ढया।
सब मैला मन दीया साफ करे जेहडा लाल दयाल कहलाएगा।
मेरी निश्चय नाल जो गल सुने ओ मीठीयां मुरादां पाएंगा।।
शिव तेरे दी इको मरजी ए हुन झुठ बोलन दी लोड नही।
तेरे लखा ही क्रीशमे सुन देखे हुन सानु प्यारे थोड नही।।
श्री विष्णु स्वरुपी लाल सुनो चरना विच जेहडा आएगा।
ओदी कामना पूरी कर देना ओ मीठीयां मुरादां पाएंगा।।
मेरी सच्ची गल हुन सुन भकता तैनु सच्चो सच सुनावागा।
मेरी निश्चय नाल जो गल सुने ओ मीठीयां मुरादां पाएंगा।।

भजन नं० 6

जय बोलो वावे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।
जेहडा पीरा दा पीर कहलावे। जय बोलो वावे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।

स्वामी चैतन शिष्य कहलाया सी। ज्ञान भक्ति दा मिई बर्षाया सी। हिन्दु मुस्लम भी शिष्य बने दुवदा दा परदा हटाया सी। जय बोलो वावे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।

करामती साधु भी देखो। हाजी शाह ओथे आया सी। चरनी झट सीस झुकाया सी। ओ रव्व दा नूर कहलाया सी। जय बोलो वावे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।

शिव चरनी ओहदी आया सी। ओहदे चरनी सीस झुकाया सी। ओ रव्व दा नूर कहलाया सी। ओहदा रज रज दर्शन पाया सी। ओ महादानी भी कहलाया। जय बोलो वावे लाल दी जय बोलो बाबे लाल दी।

❖❖❖

भजन नं० 7

तु ध्यान पूरी विच चल भकता ओथे गुरांदे दर्शन कर भकता।
ओथे आस अधुरी न रहन्दी हुन चलके दर्शन कर भकता।।
जेहडा निश्चय दी डोरी फडलेन्दा ओहन्दा हथ भी सतगुरु फड लेहन्दां। ओहदा बेडा पर भी लंग जावे शिव दास गुरु दा भी कहेन्दा।।

हुन अड्डीया प्यारे छड भकता हुन चलके दर्शन कर भकता।
तु घ्यान पूरी नू चल भकता ओथे गुरा। दे दर्शन कर भकता।।
ओथे आस अधूरी न रहन्दी हुन चल के दर्शन कर भकता।।

ओ दयालु बडा कहलान्दा ए। ओदे चरना च सीस झुका भकता ओथे आस अधूरी न रहन्दी ए हुन चलके दर्शन कर भकता।।

❖❖❖

भजन नं० 8

श्री ध्यान पूरी दी जय बोलो जिथे गुरां ने डेरा लगाया सी।
ओथे सुन्दर गंगा आई सी सगंता दा पाप मिटाया सी।।
जेहडा ओथे स्नान भी कर जान्दा ऊहना लाल सोहना फिर पाया सी। श्री गुरां जी दी मेहर निराली सी। जिन्हा रज रज दर्शन पाया सी।। श्री ध्यान पूरी दी जय बोलो जिथे गुरां ने डेरा लगाया सी।
शिव चलके तु दिदार करी ओहदे चरना ऊते सीस धरी।
मोक्ष पदवी दा दर खुले अन्दर जाके दिदार करी।।
श्री ध्यान पूरी दी जय बोलो जिथे गुरां ने डेरा लगाया सी।
ओथे सुन्दर गंगा आई सी संगता दा पाप मिटाया सी।।

❖❖❖

भजन नं० 9

जय बोलो सतगुरु पूरे दी जेहडे लाल दयाल कहलान्दे नी
संगता दीयाँ आशा पूरीयां करे महादानी ओ कहलान्दे नी।
श्री ध्यान पूरी विच रहन्दे नी। हर बेले प्रभु नु ध्यान्दे नी।
जेहडा चरनी ओहदी लग जावे मुह मंगीयाँ मुरादां पान्दे नी।
संगता दीयां आशा पूरीयां करे महादानी लालकहलान्दे नी..
जय बोलो बाबे लाल दी जेहडे महादानी कहलान्दे नी।
संगता दीयां आशा पूरीयां करे सतगुरु पूरें कहलान्दे नी।।

जेहडा चरन ओहदे सुन फड्ड लेन्दा ओ मिट्ठीयां मुरादां प
जान्दा ।।
ओहदा जीवन सुफल भी हो जावे शिव ओसदा शुक्र मुनाद
ए जय बोलो बाबे लाल दी।
जेहडा ध्यान पूरी विच रहन्दा ए संगता दी आशा पूरीयां करे
महादयालु लाल कहलान्दा ए
जय बोलो बाबे लाल दी ....

❖❖❖

भजन नं० 10

ओ पुत दीयां जोडीयां देन्दा ए जेहडा लाल दयाल कहलान्दा ए। जेहडा लड्ड भी ओहदा फड़ लेहन्दा ओ मीट्ठीयां मुरादां पान्दा ए।।

मैनु झुठ बोलन दी लोड़ नही तु ध्यान पुरी विच चल भकतां।
अरवीया नाल जल्वे देख लवी ओथ चलके देख ली तु भकतां।
मनोकामना पूर हो जासी ओ लाल दयाल कहलान्दा ए।
ओ विष्णु स्वरुपी आया ए दुनिया दा कष्ट मिटाया ए।
ओहदी महिमा बड़ी न्यारी ए ओदा दर्शन चल के कर भकतां।
जेहड़ा लाल दयाल कहलान्दा ए जेहड़ा लड्ड ओन्दा सुन फड्ड लेन्दा ओ पुत सोहना भी पान्दा ए ओ पुत दी जोड़ीयां देन्दा ए ओहदा फड्ड लेन्दा लड्ड जेहड़ा ओ मिट्ठीयां मुरादां पान्दा ए।
ओ पुत दी जोड़ीयां देन्दा ए जेहड़ा लाल दयाल कहलान्दा ए।।

❖❖❖

।। लेखक के विचार ।।

श्री प्रिये बर सज्जनों तथा माताओं तथा बहनों मैं कोई ज्ञानी योगी तपस्वी नहीं हूँ और न ही कोई मैं व्याकरण की जानकारी है और न ही कोई इतना पढ़ा लिखा विद्वान हूँ केवल उस परिपूर्ण विष्णुंशी बाबा लाल दयाल की प्रेरणा के द्वारा उसकी परम पवित्र गाथा तथा उनके भजनादि लिखने का सुभाग्य प्राप्त हुआ। मैं तो यही अनुभव कर रहा हूँ यह सब गुरु महाराज जी की कृपा का करिश्मा है जो मैं उनकी पवित्र गाथा को आप के सन्मुख रखने का प्रयतन्न कर रहा हूँ मुझे आशा है इस छोटी सी पुस्तक से लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल करने का प्रयतन्न करेंगें।

एक और खुशी की बात है कि श्री मद्‌भागवत महापुराण पद्य तथा दोहों में सरल भाषा में जिसको 12 बर्ष लिखने में सलगन्न हुए हैं वह भी शीघ्र जन्ता जर्नादन के हाथों में होगा केवल मैं इन शब्दों के साथ अपनी वाणी को विश्राम देता हूँ।।

आप का शुभचिंतक
शिव राम शर्मा वैष्णवी
भद्रोड़, जम्मू।

❖❖❖

Printed at :- ANEJA PRINTERS-0191-542309.